International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2016, Vol. No. 6, Issue No. I, Jan-Mar **e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671**

RISE OF MUSLIM COMMUNALISM IN INDIA AND MUSLIM LEAGUE

Dr. Manoj Singh Yadav

Asst Prof, Dept of History, Kashi Naresh Govt PG College, Gyanpur, Bhadohi

भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उदय और मुस्लिम लीग

डॉ0 मनोज सिंह यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर–इतिहास, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही।

IJRSSH

19 वीं षताब्दी के पूर्वाद्ध तक भारत में हिन्दू–मुसलमानों के बीच पर्याप्त सद्भावना थी। वे आपस में मिल जुलकर रहते थे। 1857 ई0 के विप्लव के दौरान व कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजो से लड़े। बहादुरषाह जफर समस्त भारत के बादषाह माने जाते रहे परन्तु अनेक कारणों से 19 वीं षताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारत में सांप्रदायिक भावना का विकास होने लगा। इसने भारतीय राजनीति को भी प्रभावित किया जिसका परिणाम भारत विभाजन के रूप में सामने आया। भारतीय राजनीति में साप्रदायिकता के उदय के लिए अनेक कारण जिम्मेदार थे।

भारत में साप्रदायिकता के उद्भव एवं विकास में अंग्रेजो की फूट डालने की नीति बहुद हद तक जिम्मेदार मानी जा सकती है। सम्भवतः मुगल बादषाह द्वारा 1857 ई0 के संग्राम को नेतृत्व प्रदान करने से अंग्रेजों के दिमाग में मुसलमानों के प्रति क्रोध उभरा। वे इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि बंगाल और अन्ततः भारत का राज्य उन्होने वहाँ के मुसलमान षासकों को हटाकर ही प्राप्त किया था। फलतः उन्हें सदैव मुसलमानों की तरफ से भय बना रहा। इसलिए मुसलमानों को दबाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी गई। 1857 ई0 के पष्चात् जहाँ हिन्दुओं से नरमी से पेष आये वही मुसलमानों के साथ कठोरतापूर्वक व्यवहार किया गया। एक

अनुमान के अनुसार सिर्फ दिल्ली में ही 27 हजार मुसलमानों को फांसी की सजा दी गई। मुसलमानों का सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक अधः पतन हो गया। इस दौरान सरकार ने हिन्दुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रूख अपनाया। लार्ड एलिनबरो ने स्पश्ट षब्दों में कहा था ''यह जाति (मुसलमान) सिद्धान्ततः हमसे विद्वेश रखती है और इसी कारण हमारी नीति हिन्दुओं को संतुश्ट करने की है।'' इस नीति के अनुसार षासन एवं सेना में उनका प्रवेष धीरे–धीरे बन्द किया जाने लगा। लेकिन सरकार की यह नीति अस्थायी सिद्ध हुई। भारत में राश्ट्रीय चेतना के उदय के साथ ही अंग्रेजो को अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। भारत में राश्ट्रीयता के उदय ने अंग्रेजो के लिए खतरे की घंटा बजा दी। इस खतरे से उबरने के लिए उन्हे भारत में सांप्रदायिकता को बढ़ावा देकर फूट डालने से बेहतर कोई भी हथियार नजर नहीं आया। अतः इसका इस्तेमाल उन लोगों ने किया। अब अंग्रेजो ने मुसलमानों के प्रति कठोर नीति अपनाने के बदले उनका हिमायती एवं हमदर्द बनने का ढोंग रचा। हिन्दू मुस्लिम एकता को समाप्त करने के उद्देष्य से उन्होने मुसलमानों का हमदर्द होने का दावा किया। दोनों सम्प्रदायों के बीच खाई को बढ़ाने के लिए उन्होने अदालतों में उर्दू की जगह हिन्दी भाशा के प्रयोग के लिए किये गये आन्दोलनों का अपना समर्थन देकर विहार और उत्तर प्रदेष के मुसलमानों को एक दूसरे से विमुख कर दिया। विभिन्न वर्गों के हितो और स्वार्थों को अलग–अलग प्रश्रय देकर सरकार ने भारत में सांप्रदायिक भावना का बीजारोपण किया जिसके आने वाले समय में भयंकर परिणाम निकले।

मुसलमानों का आर्थिक एवं सांस्कृतिक पिछड़ापन भी सांप्रदायिकता को उभारने में सहायक सिद्ध हुआ। सरकार की आर्थिक नीतियों का मुसलमानों पर बहुत बुरा असर पड़ा। बंगाल की स्थाई भूव्यवस्था ने पुराने भूमिपतियों का जिनमें अनेक मुसलमान थे नाष कर दिया। उनकी जगह जमींदारों का नया वर्ग पैदा हुआ जिनमें अनेक हिन्दू थे। बंगाल के उद्योग धन्धों के विनाष विषेशतया वस्त्र उद्योग ने भी मुसलमानों पर आर्थिक कहर ढा दिया था। सरकारी नीतियों के तहत उन्हे नौकरियाँ मिलनी भी कम हो गई परिणाम स्वरूप उनके बीच गरीबी और बेरोजगारी बढ़ने लगी। दूसरी तरफ हिन्दुओं को सरकारी नौकरियाँ मिलने से षिक्षित मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग वालों के प्रति मुसलमानों का विद्वेश बढ़ा। वे हिन्दुओं को ही अपनी गरीबी एवं पतन के लिए जिम्मेदार मानने लगे। इसी प्रकार मुसलमान अपनी रूढ़िवादिता और कट्टरता के चलते आधुनिक पाष्चात्य षिक्षा के विकास का लाभ नहीं उठा सके जबकि हिन्दुओं ने इसका

IJRSSH

पूरा लाभ उठाया। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में षिक्षित वर्ग या अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगो की संख्या बहुत कम रही फलतः वे सरकारी नौकरियों में पिछड़ते चले गये। मुसलमानों ने उद्योग व्यापार में भी दिलचस्पी नहीं ली अतः उनकी आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति षोचनीय बनी रही जबकि हिन्दू षैक्षणिक एवं आर्थिक क्षेत्र में प्रगति कर रहे थे। इस विशमता ने मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति विद्वेश की भावना भर दी। इसे भड़काने में मुसलमानों के अल्पसंख्यक परन्तु षैक्षणिक एवं आर्थिक दृश्टिकोण से सम्पन्न उच्च वर्ग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे आसानी से गरीब और अषिक्षित मुसलमान जनता के रहनुमाई बनकर अपने स्वार्थों की सुरक्षा के लिए अंग्रेजी शडयन्त्र के षिकार बन बैठे। इन लोगों ने अंग्रेजो के प्रति अपनी निश्ठा बनाये रखकर अपने लिए सुविधाओं और अधिकारों की माँग की । इन सब के चलते हिन्दू–मुसलमान एकता में दरार पड़ती गई।

19 वीं एवं 20 वीं षताब्दी में प्रायः प्रत्येक धर्म हिन्दू, सिख, इस्लाम, पारसी में धर्म सुधार आन्दोलन हुए इन धर्म सुधारों और धर्म सुधारकों की एक विषेशता यह थी कि इन्होने अपने–अपने धर्म के गौरव को बढ़ाने पर जोर दिया। ब्रम्ह समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी रामकृश्ण मिषन आदि ने वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का प्रचार किया जिसका विदेषी जातियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। विषुद्ध हिन्दू धर्म के पुनुरूत्थान का नारा इन लोगो ने दिया इसी प्रकार मुसलमानों के बीच बहाबी और अहमदिया आंदोलन हुए जिनका मुख्य उद्देष्य इस्लाम को इसके वास्तविक रूप में स्थापित करना था। जहाँ हिन्दू धर्मसुधारक आर्य धर्म की श्रेश्ठता स्थापित करने को व्याकुल थे वही मुसलमान सभी गैर मुसलमानों के प्रति धर्मयुद्ध का नारा देकर इस देष में 'दारूल–इस्लाम' की स्थापना करना चाहते थे। फलतः दोनो ही एक दूसरे को अविष्वास और षंका की दृश्टि से देखने लगे।

सांप्रदायिकता को बढ़ाने में साप्रदायिक विचार धारा से प्रभावित इतिहास की षिक्षा का भी हाथ कम नहीं था। अंग्रेज और उनसे प्रभावित कुछ भारतीय इतिहासकारों ने साम्राज्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर ऐसे इतिहास की रचना की जिसने हिन्दू मुसलमानों में फूट का का बीज बो दिया। धार्मिक दृश्टिकोण से भारतीय इतिहास को हिन्दूकाल और मुसलमान काल में विभक्त किया गया। अग्रेंजो के षासनकाल को आधुनिक काल का नाम दिया गया। इन इतिहासकारों ने हिन्दू काल को भारतीय इतिहास का सबसे अच्छा समय बताया। गुप्तों के षासनकाल को जिस समय प्राचीन बौद्धिक धर्म का पुनरूत्थान हुआ 'स्वर्ग युग' की संज्ञा दी

IJRSSH

गई। विद्यार्थियों को यह समझाने की कोषिस की गई कि भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना (चाहे वह तुर्क रहे हो, अफगान या मुगल) ने भारत के गौरवमय अतीत को समाप्त कर दिया। राजपूतों ने इन विदेषी आक्रमणकारियों का मुकाबला करने में प्राणों की आहुति दे डाली। मुसलमान षासको ने हिन्दू जनता पर अत्याचार किये, उन्हे धर्म परिवर्तन करने को बाध्य किया, हिन्दुओं के मन्दिरों को नश्ट किया इत्यादि। ऐसी षिक्षा ने हिन्दुओं के दिलों में मुसलमानों के प्रति नफरत और सन्देह की भावना भर दी।

सांप्रदायिकता के विकास में हिन्दू कट्टर पंथ ने भी योगदान दिया। हिन्दू धर्म एवं समाज के सुधारकों ने हिन्दुओं में जातीय श्रेश्ठता का दंभ भर दिया। वे अपने आप को संसार की सर्वश्रेश्ठ जाति मानने लगे और दूसरों को खासकर मुसलमानों को हिफारत की नजर से देखने लगे। स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म एवं दर्षन की महानता का ढिढोरा समूचे विष्व में पीटा। उग्र राश्ट्रवादी इससे भी आगे निकल गये ।इन लोगों ने भी हिन्दू धर्म की श्रेश्ठता को उभारने का प्रयास किया। महाराणा प्रताप और षिवाजी को वीर एवं राश्ट्रीय नेता के रूप में चित्रित किया गया जबकि अकबर और औरंगजेब को आक्रामक विदेषी षासक के रूप में औरंगजेब को धर्माथ एवं हिन्दू धर्म का कट्टर विरोधी सावित किया गया। इतिहास से प्रेरणा लेकर तिलक ने षिवाजी और गणपति उत्सव प्रारम्भ किये। काली भवानी की पूजा या गंगा को पवित्र मानकर क्रांतिकारियों द्वारा षपथ लेना इस बात की तरफ स्पश्ट इषारा करता है कि चाहे अनचाहे उग्र राश्ट्रवादी भी हिन्दू कट्टर पंथ से प्रभावित होकर अंग्रेजी सत्ता के प्रति अपना संघर्श चला रहे थे। स्वभावतः इससे मुसलमानों में असुरक्षा की भावना पैदा हुई। अंग्रेजो को वे अपना रक्षक और हितैशी मानने लगे और हिन्दुओं से दूर हटते गये।

मुसलमानों में नवजागरण लाने अपने अधिकारों के प्रति सचेश्ट रहने की भावना का विकास अलीगढ़ आंदोलन और इसके नेता सैयद अहमद खाँ ने किया। प्रारम्भ में उनका सम्पूर्ण ध्यान मुसलमानों विषेशकर उच्चवर्गीय मुसलमानों में षिक्षा के प्रसार की ओर था। उन्होने उन्हें आधुनिक अंग्रेजी षिक्षा ग्रहण करने को प्रेरित किया एवं इसके लिए प्रयास भी किये। वे हिन्दू मुस्लिम एकता के भी पक्षधर थे। उन्होने स्वयं कहा था ''याद रखो कि हिंदू और मुसलमान षब्द धार्मिक पहचान के लिए हैं अन्यथा सभी मनुश्य चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान हों यहाँ तक कि इस देष में रहने वाले ईसाई हो इस विषेश अर्थ में एक हैं कि वे उसी राश्ट्र के हैं। सभी को देष के लिए संगठित होना चाहिए जो समान रूप से सभी का है।'' दुर्भाग्यवष

IJRSSH

कालान्तर में सैयद अहमद के विचारों में परिवर्तन आया वे रूढ़िवादी और सांप्रदायिक बनते गये। उन्हे प्रजातंत्र की स्थापना आपत्तिजनक लगी क्योंकि देष के सभी वर्ग समान रूप से षिक्षित तथा प्रगतिषील नहीं थे। उन्हे यह भी भय हुआ कि संसादात्मक प्रजातंत्र के परिणामस्वरूप पूरा देष दो दलों हिन्दू मुसलमानों में बंट जायेगा जिसमें अल्पसंख्यक मुसलमान कभी सत्ता में नहीं आ सकेगें। फलतः उन्होने अंग्रेजी राज को और मनोनीत प्रषासकों को उचित माना। कांग्रेस की स्थापना के पष्चात वे इसके कट्टर दुष्मन बन बैठे। उनका विष्वास था कि कांग्रेस सिर्फ हिन्दुओं की संस्था है ओर मुसलमानों को इससे अलग रहना चाहिए। हिन्दुओं और मुसलमानों को विभेद उग्र होता गया। मुसलमान भी अब हिन्दुओं की तरह अपने हितों की रक्षा के लिए संगठित होने का प्रयास करने लगे इसी प्रयास का परिणाम था। 1906 ई0 में मुस्लिम लीग की स्थापना। स्वतंत्रता प्राप्ति तक कांग्रेस और लीग ने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई।

मुस्लिम लीग की स्थापनाः *कांग्रेस से विमुख होकर मुसलमानों ने अपना एक राजनीतिक संगठन बनाने का निष्चय किया जो उनके हितों की सुरक्षा कर सके। अंग्रेज राजनीतिज्ञ एवं अधिकारी भी भारत में कांग्रेस के बढ़ते प्रभाव एवं राश्ट्रीयता के विकास से चिन्तित थे। इसे रोकने का उनके पास सबसे बढ़िया उपाय था हिन्दू मुसलमानों में विभेद को बढ़ाना एवं कांग्रेस की प्रतिद्वन्दी संस्था जो मुसलमानों की हो की स्थापना करवाना। इस कार्य में कुछ इतिहासकारों के अनुसार अलीगढ़ कालेज के प्राचार्य आर्चबोल्ड और वायसराय मिंटो के प्राइवेट सेक्रेटरी डनलय स्मिथ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके संकेत पर 36 मुसलमानों का एक षिश्ट मण्डल आगा खाँ की अध्यक्षता में 1 अक्टूबर 1906 को वायसराय वार्ड मिंटो से षिमला में मिला। षिश्ट मंडल ने वायसराय को मुसलमानों की राजभक्ति का विष्वास दिलाया और अपने लिए कुछ सुविधाओं की मांग की। इन मांगों में प्रमुख थी। मुसलमानों को उनके राजनीतिक महत्व और साम्राज्य की रक्षा में की गई सेवाओं के आधार पर व्यवस्थापिका सभाओं में स्थान देना, नौकरियों में उचित प्रतिनिधित्व देना, हाईकोर्टो एवं अन्य अदालतों में मुसलमान न्यायाधीषों की बहाली एवं मुस्लिम निर्वाचक मण्डल की स्थापना वायसराय ने उनकी मांगो को जायज ठहराया और उन्हे पूरा करने का आष्वासन दिया। इसस उत्साहित होकर मुसलमानों ने एक केन्द्रीय संगठन के निर्माणा की योजना बनाई। दिसम्बर 1906 ई0 में ढाका में मोहम्मडन एजूकेषन कांग्रेस में भाग लेने के लिए प्रमुख मुसलमान एकत्र हुए थे। वहीं संस्था के निर्माण*

IJRSSH

की योजना बनी फलतः 30 दिसम्बर 1906 ई0 को ढाका के नवाब सलीमुल्लाह मोहसिन मुल्क, आगा खाँ और नबाब बकर–उल–मुल्क के प्रयासों से आल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना का निर्णय लिया गया। सभा की अध्यक्षता बकर–उल–मुल्क ने की।

1907 ई0 में के कराची अधिवेषन में मुस्लिम लीग के उद्देष्यों को स्पश्ट किया गया। ये उद्देष्य निम्नलिखित थे–

1–भारत में मुसलमानों में अंग्रेजी सरकार के प्रति वफादारी को बढ़ाना तथा सरकार के प्रति गलत फहमी को दूर करना।

2–भारत के मुसलमानों के राजनीतिक और अन्य अधिकारों की रक्षा करना तथा उनकी इच्छाओं एवं आकाक्षाओं को विनीत ढंग से सरकार के सम्मुख रखना।

3–पहले दोनों उद्देष्यों को नुकसान पहुँचाये बिना मुसलमानों तथा अन्य संप्रदायों के बीच मैत्री भावना का प्रचार करना।

इस प्रकार भारतीय राजनीति में अंग्रेज सरकार कांग्रेस और मुस्लिम लीग का एक त्रिभुज बना। कांग्रेस और लीग दोनों की स्थापना में सरकार ने दिलचस्पी ली थी। दोनो संस्थाओं की स्थापना का मुख्य उद्देष्य भारत में ब्रिटिष साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाये रखना एवं राश्ट्रीयता के विकास को रोकना था। परन्तु दोनो ने ही अंग्रेजो को छला। यह अलग बात है कि कांगेस और लीग के अपने–अपने निहित स्वार्थ थे जिनकी उन्होने रक्षा की।

संदर्भ ग्रन्थः–

1–प्राब्लमस ऑफ माइनोरिटिज : के0 वी0 कृश्णा

2–आज का भारत : रजनी पाम दत्त

3–मार्डन इस्लाम इन इंडिया : डब्ल्यू0 सी0 स्मिथ

4–भारत का स्वतंत्रता संघर्श : विपिन चन्द्र

5–भारतीय राश्ट्रवाद की सामाजिक पृश्ठभूमिः ए0 आर0 देसाई

6–इण्डियन मुस्लिम : राम गोपाल

7–आधुनिक भारत : सुमित सरकार

8–आधुनिक भारत : एम0एस0जैन

9–दि मेकिंग ऑफ मार्डन इंण्डिया : एस0 आर0 षर्मा

IJRSSH

10–दि ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डियाः वी0 स्मिथ

11–ब्रिट्रिष कालीन भारत का इतिहास : पी0 ई0 राबर्टस

12–भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास : ताराचंद्र

13–आधुनिक भारत का इतिहासः जगन्नाथ प्रसाद

14–दि इण्डियन मुस्लिम : डब्ल्यू हण्टर

15–भारत का मुक्ति संग्राम : अयोध्या सिंह

16–दि अलीगढ़ मूवमेंट : एम0 एस0 जैन

REFERENCES:

1. Problems of Minorities: K. V. Krishna
2. Aaj ka Bharat: Rajni Pal Dutt
3. Modern Islam in India: W. C. Smith
4. Bharat ka Swatantrata Sangharsh: Vipin Chandra
5. Bharatiya Rashtravaad ki Samajik Prishtbhoomi: A. R. Desai
6. Indian Muslims: Ram Gopal
7. Adhunik Bharat: Sumit Sarkar
8. Adhunik Bharat: M. S. Jain
9. The Making of Modern India: S. R. Sharma
10. The Oxford History of India: V. Smith
11. British Kaleen Bharat ka Itihaas: P. E. Roberts
12. Bhartiya Swatantrata Andolan ka Itihaas: Tarachandra
13. Adhunik Bharat ka Itihaas: Jagannath Prasad
14. The Indian Muslim: W. Hunter
15. Bharat ka Mukti Sangram: Ayodhya Singh
16. The Aligarh Movement: M. S. Jain

IJRSSH